Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

भारतीय संगीत और नारी

डॉ0 अनिल कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
चौ0 शिवनाथ सिंह शाण्डिल्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, माछरा, मेरठ

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 184-188

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

शोध सारांश–सभ्यता से वर्तमान तक की जीवन यात्रा में नारी की उपयोगिता उसका महत्त्व और उसके दर्जे में भी उतार–चढ़ाव आते रहे हैं, लेकिन इन सभी विभिन्नताओं के बावजूद भी भारतीय संस्कृति में नारी की माँ और देवी शक्ति के रूप में दर्जा हमेशा ऊँचा रहा है। हमारे आचार्यगण भी व्यवहारिक जीवन की शिक्षा में ''मातृदेवी भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव' कहते थे। इनमें माता का स्थान गुरू और पिता से पहले है। कला मानव–संस्कृति का प्राण है, जिसमें मन तथा शरीर की अनुभूति निहित है। संगीत के गायन, वादन और नृत्य तीनों क्षेत्रों में महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संगीत परम्परा की भाँति महला सभ्यता भी अति प्राचीन है। वैदिक काल में भी अपाला, लोपामुद्रा, घोषा आदि संगीत की अच्छी ज्ञाता थीं। महाकाव्य काल में राज्य सभाओं में भी संगीतकला में निपुण महिलाओं को राजकलाकार के रूप में नियुक्त किया जाता था। बौद्ध–साहित्य तथा जैन ग्रन्थों में भी नारियों द्वारा मधुर गायन का उल्लेख मिलता है। गुप्तकाल भारतीय इतिहास में कला साहित्य और संगीत की दृष्टि से स्वर्ण युग कहलाता था। इस युग में स्त्री को शिक्षा के अधिकार से पूर्णतः वंचित किया गया। गुप्तकाल से मुगल साम्राज्य के पतन तक का इतिहास एक ओर भारतीय नारी के आत्म बलिदान की कहानी है तो दूसरी ओर घर की चार दीवारी की अंध कोठरी में कैद होने की मर्म भेदी दास्तान। बीसवीं शताब्दी का आरम्भ केवल भारत के स्वतंत्र युग का ही क्रान्तिकाल नहीं है अपितु संगीत कला की दृष्टि से भी अनोखी क्रान्ति का युग माना जा सकता है। संगीत के आकाश में दो नक्षत्रों– पं0 विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं0 विष्णु दिगम्बरपुलस्कर का उदय हुआ जिन्होंने नारी वर्ग को संगीत साधना के सुअवसर प्रदान कराए। वर्तमान में कुछ महिलाओं ने अनेक संघर्षों के बाद संगीत जगत में ऐसे मानदंड स्थापित किए हैं जो अविस्मरणीय रहेंगे। ऐसी महान महिला कलाकारों में स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को उत्कृष्ट पार्श्व गायिका एवं एम0एस0 सुब्बलक्ष्मी हीला को भारतीय शास्त्रीय गायिका के रूप में सारा संसार जानता है। आज के परिप्रेक्ष्य में आकाशवाणी, दूरदर्शन के साथ–साथ छोटे व बड़े पर्दे पर पर भी महिला कलाकार आकर्षण का केन्द्र

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

रहीं हैं। नारी शक्ति है, यह केवल अतीत का विषय नहीं, आज भी वह शक्ति है। केवल इस शक्ति को पहचानने की जरूरत है नये और पुराने विचारों की दुविधा से निकल उसकी अच्छाइयों को चुनने और उसमें तालमेल बैठाने की जरूरत है।

मुख्य शब्द– संगीत, साधना, नारी, संस्कृति, इतिहास।

मानव–सभ्यता से वर्तमान तक की जीवन यात्रा में नारी की उपयोगिता उसका महत्त्व और उसके दर्जे में भी उतार–चढ़ाव आते रहे हैं, लेकिन इन सभी विभिन्नताओं के बावजूद भी भारतीय संस्कृति में नारी की माँ और देवी शक्ति के रूप में दर्जा हमेशा ऊँचा रहा है। हमारे आचार्यगण भी व्यवहारिक जीवन की शिक्षा में ''मातृदेवी भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव' कहते थे। इनमें माता का स्थान गुरू और पिता से पहले है। जगद्गुरू शंकराचार्य ने भी कहा है ''जगन्नमाता जगत गुरू'' यह जगमाता का स्थान न केवल परिवार और समाज में माँ के ऊँचे सीान का परिचायक है, बल्कि उसे दैवत्व तक उठाकर आदि शक्ति का रूप भी दिया गया हैं संसार में शक्ति के बिना न तो किसी लौकिक कार्य में सफलता मिलती है, न किसी साधना में सिद्धि। अतः नारी जीवनदात्री है–सृष्टि का आधार है, वह त्याग और बलिदान की प्रतिमा है। नारी के बिना समकाज अधूरा है। कला मानव–संस्कृति का प्राण है, जिसमें मन तथा शरीर की अनुभूति निहित है। भारत का इतिहास इा बात का साक्षी है कि जो भी कार्य हुए हैं उसमें नारियों का बहुमुखी योगदान रहा है। संगीत के गायन, वादन और नृत्य तीनों क्षेत्रों में महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्योंकि अपने गांवों की अभिवयंजना मनमोहन एंग से एक महिला ही कर सकती है। नारी का प्रत्येक क्रियाकलाप कलापूर्ण होता है। सुकुमरता, मृदुलता, सरसता, मादकता आदि अनेक भावों को महिला जितनी कुशलता से व्यक्त कर सकती है, उतना पुरूष नहीं। यही कारण है कि संगीत जैसी सर्वोपरि कला और महिलाओं का अभिन्न सम्बन्ध है।

भारतीय संगीत परम्परा की भाँति महिला सभ्यता भी अति प्राचीन है। यदि अतीत का अवलोकन करें तो पायेंगे कि महिलाओं का सदैव से धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है यहाँ तक कि संगीत की उन्नति भी अधिष्ठात्री देवी सरस्वती मानी गयी है। देवांगनाओं और अप्सराओं में संगीत की सिद्धहस्तता, संगीत के क्षेत्र में नारी की अनोखी भूमिका का ही संकेत देती हैं वैदिक काल में भी अपाला, लोपामुद्रा, घोषा आदि संगीत की अच्छी ज्ञाता थीं। महाकाव्य काल में राज्य सभाओं में भी संगीतकला में निपुण महिलाओं को राजकलाकार के रूप में नियुक्त किया जाता था जिसका जीवंत उदाहरण है वैशाली की नगर वधु आम्रपाली।

गुलाम रसूल ने तो संगीत का दूसरा रूप नारी को माना है।

नारी ही संगीत है, जाके है दो रूप।
एक रूप तो गीत है, दूजा नृत्य स्वरूप।।

विशेषकर आधुनिक काल में उत्तर भारतीय संगीत में महिलायें पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। चाहे वो संगीत की कठिनतम ध्रुवपद, धमार जैसी मर्दानी गायकी हो या अवनद्ध वाद्य, जिस पर पुरूष वर्ग सदा से अपना आधिपत्य मानते आये हैं अब वो विधायें भी महिलाओं से अछूती नहीं है।

बौद्ध–साहित्य तथा जैन ग्रन्थों में भी नारियों द्वारा मधुर गायन का उल्लेख मिलता है। 'सामगायन' जैसे धार्मिक अवसर तथा अन्य या एवं धार्मिक संस्कारों के अवसरों तक में नारियों का सहयोग था। गुप्तकाल भारतीय इतिहास में कला साहित्य और संगीत की दृष्टि से स्वर्ण युग कहलाता था। 'नाट्य–शास्त्र' के

रचियता भरत इसी युग में हुए। इस युग के प्रसिद्ध काव्य नाटकों में वासवदत्ता और वसन्तसेना कलाविद और ऊँचे दर्जे की गणिका के रूप में सम्मान के साथ चित्रित हुई हैं।

इस युग में स्त्री को शिक्षा के अधिकार से पूर्णतः वंचित किया गया। गुप्तकाल से मुगल साम्राज्य के पतन तक का इतिहास एक ओर भारतीय नारी के आत्म बलिदान की कहानी है तो दूसरी ओर घर की चार दीवारी की अंध कोठरी में कैद होने की मर्म भेदी दास्तान। यह कबीर, सूर, तुलसी जैसे क्रान्तिकारी भक्त कवियों का जमाना था। इन्होंने भी नारी को ढोल, गंवार, शूद्र और पशु की कोटि में रखकर प्रताड़ना का अधिकारी ही समझा। इस संपूर्ण काल खण्ड में मीरा ही एक ऐसा नाम था जिसने सामाजिक बंधनों और अत्याचारों का मुकाबला करके नारी जाति को आशा की एक किरण दिखाई। संगीत की अभिजात शैलियों पर पुरूष का एकाधिकार था। 19वीं शताब्दी तक के नाटकों में भी स्त्री पात्रों का अभिनय पुरूष पात्रों द्वारा किया जाना स्त्री की सामाजिक पराधीनता का जीता जागता उदाहरण है। ब्रिटिश काल में भी स्त्रियों को सामाजिक बंधनों के कारण संगीत साधना का सुअवसर प्राप्त नहीं हो सका क्योंकि उस समय संगीत शिक्षक पुरूष ही थे। ऐसे में केवल संगीत द्वारा धनोपार्जन करने वाली नारियों ने ही समाज के विरोध को सहते हुए कला का प्रदर्शन जारी रखा तथा राजदरबार में गायन किया। उनकी परम्परा में गौहर जान, मलिका जान, जोहरा बाई, विनोदी जान, चंद्रकला, राजेश्वरी बाई, जानकी बाई, नसीब जान, आदि उल्लेखनीय रहीं जिन्होंने शास्त्रीय संगीत के निबद्ध संदिशों को गाया। ऐसा कलाविद् नारियों को समाज ने अपने से दूर भगाया।

बीसवीं शताब्दी का आरम्भ केवल भारत के स्वतंत्र युग का ही क्रान्तिकाल नहीं है अपितु संगीत कला की दृष्टि से भी अनोखी क्रान्ति का युग माना जा सकता है। सदियों की गुलामी में जकड़ी नारी अपने शोषण के खिलाफ बड़ी हुई लक्ष्मी बाई, सरोजनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी आदि महिलाओं ने जहां सामाजिक राजनीतिक क्रियाकलापों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया वहीं संगीत के क्षेत्र में कोठों की परम्परावाली अनेक स्त्रियों ने कोठे त्याग दिए तथा कला की साधना में लग गईं।

संभ्रान्त परिवार की महिलाओ ंने भी संगीत की तालीम लेनी शुरू कर दी। समाज व जनसाधारण में संगीत के प्रति अरूचि और संगीत के ह्रास की स्थिति में संगीत के आकाश में दो नक्षत्रों– पं0 विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं0 विष्णु दिगम्बरपुलस्कर का उदय हुआ जिन्होंने नारी वर्ग को संगीत साधना के सुअवसर प्रदान कराए और संगीत विशारद नारियों को उचित सम्मान दिलाया। आधुनिक काल में चूंकि स्त्री शिक्षा का अतयधिक प्रचार हो गया है इस कारण लड़कियां पढ़ाई व संगीत शिक्षा साथ–साथ ग्रहण करती हैं। आज नारी वर्ग संगीत के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ चुका है। रेडियो, टेलीविजन और संगीत सम्मेलनों में उन्हें सम्माननीय स्थान प्राप्त होता है और कलाकार एवं शिक्षिका के रूप में उसे अपनी आजीविका का साधन भी सम्मानपूर्वक बनाती है। वर्तमान समय में शिक्षिका, रेडियो, कॉन्फ्रेंसों, टेलीविजन व मंच प्रदर्शन में भाग लेने वाली स्त्री कलाकारों के इस मार्ग में आने का मुख्य कारण उनकी इच्छा व रूचि है।

वर्तमान में कुछ महिलाओं ने अनेक संघर्षों के बाद संगीत जगत में ऐसे मानदंड स्थापित किए हैं जो अविस्मरणीय रहेंगे। ऐसी महान महिला कलाकारों में स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को उत्कृष्ट पार्श्व गायिका के रूप में सारा संसार जानता है। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागों को अनेक गीतों के माध्यम से गाकर शास्त्रीय संगीत को उन लोगों के दरवाजों तक पहुँचा दिया है जो तानपुरे को 'तंदुरा' और शास्त्रीय संगीत को 'बांका फाड़ना' कहा करते थे। संगीत को समर्पित लता मंगेशकर को पद्मभूषण (1969), दादासाहब फाल्के (1989), महाराष्ट्र भूषण (1997) तथा 26 जनवरी 2001 को भारत सरकार के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

संगीत के सुमधुर स्वरों की स्वामिनी समाज सेविका, संगीत को समर्पित दक्षिण भारतीय शास्त्रीय गायिका एम0एस0 सुब्बलक्ष्मी होला की देवदासी पम्परा से सम्बन्धित थी परन्तु टी0 सदा शिवम् जैसी सुधारवादी ब्राह्मण से विवाह होने से उनका कार्यक्षेत्र व्यापक बना और उनकी संगीत साधना को भारत सरकार द्वारा 1954 में पदमविभुषण, 1956 में राष्ट्रीय पुरस्कार 1975 में पदमविभुष्ज्ञण एवं 14 जनवरी 1988 में राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च सम्मान ''भारत रत्न'' से नवाजा गया। इसी तरह अनेक महिला कलाकारों में गंगूबाई हनंगल, गिरिजा देवी, किशोरी, आमणकर, परवीन सुलताना, प्रभा अत्रे, शोभा गुर्टु आदि गायिकाएं वाद्यवादन में अन्नपुणदिवी, डॉ0 एनराजम (वायलिन), शिशिर कणधार चौधरी (डायलिन), शरण रानी (सरोद), जरीन दारूवाला (सरोद), सितारा देवी (कथक नृत्यांगना), दमयंती जोशी (कथक), अमला नंदी (कथक), यामिनी कृष्णमूर्ति (भरतनाट्यम), मृणालिनी साराभाई (कथकलि) श्रीमती संयुक्ता पाणिग्रही (ओडिसी नृत्य) आदि गायन वादन, नृत्य की प्रत्येक विद्या में शिखर पर ऊँचाईयों को छू चुकी हैं और देश–विदेश में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रही है। पुरूषों के एकाधिकार वाले कुछ कठिन वाद्ययंत्रों पर भी आज महिला कलाकारों ने अपना अस्तित्व जमाया है जैसे– अरूणा नारायण ने सारंगी वादन में, डॉ0 आबाद ई0 मिस्त्री ने तबला वादन में तथा बोश्वरी कमल ने शहनाई वाद्य पक्ष अधिकार कर सराहनीय कार्य किया।

नारियों का योगदान सराहनी है। आज के परिप्रेक्ष्य में आकाशवाणी व दूरदर्शन पर महिला कलाकार आकर्षण का केन्द्र रहीं हैं तथा संगीत की हर विद्या मे ंनारी संगीतज्ञ आगे है, जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है, जिनमें लता मंगेश्वर का नाम अग्रणी है, जिसके निधर के बाद भी उनके गले के तन्तु (वोकल कार्ड) की मांग की है। आधुनिक युग में संगीत के क्षेत्र में नारियों को परिवार का भरपूर सहयोग मिल रहा हैं। आधुनिक युग मे संगीत के क्षेत्र में नारियों को परिवार का भरपूर सहयोग मिल रहा है। आधुनिक नारी अपनी आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसी की दास नहीं है। लेकिन आर्थिक निर्भरता के साथ–साथ उसे मानसिक बौद्धिक व नैतिक स्तर पर भी ऊँचे उठना होगा कि अधिकार उसे मांगने न पड़े, स्वयं अर्पित किए जाएं या अपने आप पास खिचें चले आएं। इसी सन्दर्भ में दो पंक्तियां इस प्रकार हैं–

''आत्म का विश्वास और सम्मान हो नीति हमारी
मांग मत अधिकार नारी।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि नारी शक्ति है, यह केवल अतीत का विषय नहीं, आज भी वह शक्ति है। केवल इस शक्ति को पहचानने की जरूरत है नये और पुराने विचारों की दुविधा से निकल उसकी अच्छाइयों को चुनने और उसमें तालमेल बैठाने की जरूरत है। अतः प्रसिद्ध कवि रामचरित्र उपाध्याय ने भी नारी की महत्ता को स्वीकार किया है–

''है सोम से शुचिता जिसे, गन्धर्व से वाणी मिली
है पूत पावक की विमल, आभा कली जिसमें खिली,
अग्राहय या अपवित्र उसका, मानना अति मूल है।
सच मानिये जाया जगत् में, सब सुखों का मूल है''।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.संगीत–मणि, डॉ0 महारानी शर्मा

2.संगीतायन, डॉ0 सीमा जौहरी

3.संगीत विशारत, लक्ष्मी नारायण गर्ग

4.संगीत पत्रिका, लक्ष्मी नारायण गर्ग

5.भारतीय संस्कृति, डॉ0 बल्लन जी गोपाल

6.हिन्दू सभ्यता, डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल

7.संगीत परम्परा, डॉ0 भगवत शरण शर्मा

8.भारतीय संगीत की प्राचीन परम्परा, डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल

9.संगीत परिजात, पा0 महोबल